

أَنْتُمْ الْأَعْلَوْنَ ۗ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتَرَكَكُمْ أَهْلًا كُمْ ۝٢٥ إِنَّمَا الْحَيَاةُ

तुम ही ग़ालिब आओगे और **अल्लाह** तुम्हारे साथ है और वोह हरगिज़ तुम्हारे आ'माल में तुम्हें नुक़सान न देगा⁹¹ दुन्या की ज़िन्दगी

الدُّنْيَا لَعِبٌّ وَلَهْوٌ ۖ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ أَجْرَكُمْ وَلَا يَسْأَلْكُمْ

तो येही खेलकूद है⁹² और अगर तुम ईमान लाओ और परहेज़ ग़ारी करो तो वोह तुम को तुम्हारे सवाब अ़ता फ़रमाएगा और कुछ तुम से तुम्हारे माल

أَمْوَالِكُمْ ۝٢٦ إِن يُسْأَلْكُمْ عَنْهَا فَيَحْفَظْكُمْ تَبَخُّؤًا وَيُخْرِجْ أَضْعَانَكُمْ ۝٢٧

न मांगेगा⁹³ अगर उन्हें⁹⁴ तुम से त़लब करे और ज़ि़यादा त़लब करे तुम बुख़ल करोगे और वोह बुख़ल तुम्हारे दिलों के मैल ज़ाहिर कर देगा

هَآئِنْتُمْ هَآءِئِلَآءِ تَدْعُونَ لِتُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَنْ يَبْخُلُ ۚ

हां हां येह जो तुम हो बुलाए जाते हो कि **अल्लाह** की राह में ख़र्च करो⁹⁵ तो तुम में कोई बुख़ल करता है

وَمَنْ يَبْخُلْ فَإِنَّمَا يَبْخُلُ عَنْ نَفْسِهِ ۗ وَاللَّهُ الْغَنِيُّ ۚ وَأَنْتُمْ الْفُقَرَاءُ ۚ

और जो बुख़ल करे⁹⁶ वोह अपनी ही जान पर बुख़ल करता है और **अल्लाह** बे नियाज़ है⁹⁷ और तुम सब मोहताज़⁹⁸

وَإِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ ثُمَّ لَا يَكُونُوا أَمْثَالَكُمْ ۝٢٨

और अगर तुम मुंह फेरो⁹⁹ तो वोह तुम्हारे सिवा और लोग बदल लेगा फिर वोह तुम जैसे न होंगे¹⁰⁰

﴿ آيَاتُهَا ٢٩ ﴾ ﴿ سُورَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ ١١١ ﴾ ﴿ رُكُوعَاتُهَا ٢ ﴾

* सूरए फ़तह मदनिय्या है, इस में उन्तीस आयतें और चार रुकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ۚ لِيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ

बेशक हम ने तुम्हारे लिये रोशन फ़तह फ़रमा दी² ताकि **अल्लाह** तुम्हारे सबब से गुनाह बख़्शे तुम्हारे अगलों के इस की नासिख़ और एक क़ौल येह है कि येह आयत मोहक़म है और दोनों आयतें दो मुख़लिफ़ वक़्तों और मुख़लिफ़ हालतों में नाज़िल हुई और एक क़ौल येह है कि आयत "وَإِنْ جُنْحُوا" का हुक़म एक मुअय्यन क़ौम के साथ ख़ास है और येह आयत आम है कि कुफ़र के साथ मुआहदा जाइज़ नहीं मगर इन्दिज़रूरत जब कि मुसल्मान ज़ईफ़ हों और मुक़ाबला न कर सकें। **91** : तुम्हें आ'माल का पूरा पूरा अ़ता फ़रमाएगा। **92** : निहायत जल्द गुज़रने वाली और इस में मशगूल होना कुछ नाफ़ेअ नहीं। **93** : हां राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का हुक़म देगा ताकि तुम्हें इस का सवाब मिले। **94** : या'नी अम्वाल को **95** : जहां ख़र्च करना तुम पर फ़र्ज़ किया गया है। **96** : सदका देने और फ़र्ज़ अदा करने में। **97** : तुम्हारे सदकात और ताआत से **98** : उस के फ़ज्लो रहमत के। **99** : उस की और उस के रसूल की इताअत से **100** : बल्कि निहायत मुतीओ फ़रमां बरदार होंगे। **1** : सूरए फ़तह मदनिय्या है, इस में चार रुकूअ, उन्तीस आयतें, पांच सो अइसठ कलिमे, दो हज़ार पांच सो उन्सठ हर्फ़ हैं। **2** शाने नुज़ूल : "إِنَّا فَتَحْنَا" हुदैबिया से वापस होते हुए हुज़ूर पर नाज़िल हुई, हुज़ूर को इस के नाज़िल होने से बहुत खुशी हासिल हुई और सहाबा ने हुज़ूर को मुबारक बादें दीं। (بخاری و مسلم و ترمذی) हुदैबिया

وَمَا تَأَخَّرَ وَيَتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيكَ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۝٢

और तुम्हारे पिछलों के³ और अपनी ने'मतें तुम पर तमाम कर दे⁴ और तुम्हें सीधी राह दिखा दे⁵ और

يَنْصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَزِيزًا ۝٣ هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ

اللَّهِ ۝٣ तुम्हारी ज़बर दस्त मदद फ़रमाए⁶ वोही है जिस ने ईमान वालों के दिलों में

الْمُؤْمِنِينَ لِيَزِدَادُوا إِيمَانًا مَعَ إِيْمَانِهِمْ ۝٤ وَ لِلَّهِ جُنُودُ السَّمَوَاتِ

इत्मीनान उतारा ताकि उन्हें यकीन पर यकीन बढ़े⁷ और **اللَّهُ** ही की मिल्क हैं तमाम लश्कर आस्मानों

وَالْأَرْضِ ۝٥ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝٦ لِيَدْخُلَ الْمُؤْمِنِينَ وَ

और ज़मीन के⁸ और **اللَّهُ** इल्मो हिक्मत वाला है⁹ ताकि ईमान वाले मर्दों और

एक क़ुंवां है मक्कए मुकर्रमा के नज्दीक, **मुख्तसर वाकिआ** येह है कि सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने ख्वाब देखा कि हुजूर मअ अपने अस्हाब के अमन के साथ मक्कए मुकर्रमा में दाखिल हुए, कोई हल्क किये हुए (या'नी सर मुंडाए) कोई कसर किये हुए (या'नी बाल कम कराए हुए है) और का'बए मुअज्जमा में दाखिल हुए, का'बे की कुन्जी ली, त्वाफ़ फरमाया, उम्रह किया। अस्हाब को इस ख्वाब की खबर दी, सब खुश हुए फिर हुजूर ने उम्रे का कस्द फरमाया और एक हजार चार सो अस्हाब के साथ यकुम ज़िल का'दा सिने 6 हिजरी को रवाना हो गए, जुल हुलैफ़ा में पहुंच कर वहां मस्जिद में दो रकअतें पढ़ कर उम्रे का एहराम बांधा और हुजूर के साथ अक्सर अस्हाब ने भी। बा'ज अस्हाब ने "जुहफ़ा" से एहराम बांधा, राह में पानी खत्म हो गया, अस्हाब ने अज़ु किया कि पानी लश्कर में बिल्कुल बाकी नहीं है सिवाए हुजूर के आपताबे के कि इस में थोड़ा सा है, हुजूर ने आपताबे में दस्ते मुबारक डाला तो अंगुश्ट हाए मुबारक से चश्मे जोश मारने लगे, तमाम लश्कर ने पिया वुजू किये, जब मकामे उस्फ़ान में पहुंचे तो ख़बर आई कि कुफ़फ़ारे कुरैश बड़े सरो सामान के साथ जंग के लिये तय्यार हैं, जब हुदैबिया पर पहुंचे तो इस का पानी खत्म हो गया, एक क़तरा न रहा, गरमी बहुत शदीद थी, हुजूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने कूएं में कुल्ली फरमाई, इस की बरकत से क़ुंवां पानी से भर गया सब ने पिया उंटों को पिलाया यहां कुफ़फ़ारे कुरैश की तरफ़ से हाल मा'लूम करने के लिये कई शख्स भेजे गए सब ने जा कर येही बयान किया कि हुजूर उम्रे के लिये तशरीफ़ लाए हैं, जंग का इरादा नहीं है लेकिन उन्हें यकीन न आया, आखिर कार उन्होंने ने उर्वह बिन मस्ज़द सकफ़ी को जो ताइफ़ के बड़े सरदार और अरब के निहायत मुतमव्विल (मालदार) शख्स थे तहकीक़े हाल के लिये भेजा, उन्होंने आ कर देखा कि हुजूर दस्ते मुबारक धोते हैं तो सहाबा तबरक के लिये गुसाला (हाथों का धोवन) शरीफ़ हासिल करने के लिये टूटे पड़ते हैं, अगर कभी थूकते हैं तो लोग इस के हासिल करने की कोशिश करते हैं और जिस को वोह हासिल हो जाता है वोह अपने चेहरों और बदन पर बरकत के लिये मलता है, कोई बाल जिस्मे अक़दस का गिरने नहीं पाता, अगर इह्यानन (कभी) जुदा हुवा तो सहाबा उस को बहुत अदब के साथ लेते और जान से ज़ियादा अज़ीज़ रखते हैं, जब हुजूर कलाम फ़रमाते हैं तो सब साकित हो जाते हैं, हुजूर के अदब व ता'ज़ीम से कोई शख्स नज़र ऊपर को नहीं उठा सकता। उर्वह ने कुरैश से जा कर येह सब हाल बयान किया और कहा कि मैं बादशाहाने फ़ारस व रूम व मिस्र के दरबारों में गया हूं मैं ने किसी बादशाह की येह अज़मत नहीं देखी जो मुहम्मद मुस्तफ़ा (**صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ**) की उन के अस्हाब में है, मुझे अन्देशा है कि तुम उन के मुक़ाबिल काम्याब न हो सकोगे। कुरैश ने कहा : ऐसी बात मत कहो, हम इस साल उन्हें वापस कर देंगे, वोह अगले साल आएंगे। उर्वह ने कहा : मुझे अन्देशा है कि तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे, येह कह कर वोह मअ अपने हमराहियों के ताइफ़ वापस चले गए और इस वाकिए के बा'द **اللَّهُ** तआला ने उन्हें मुशरफ़ ब इस्लाम किया, यहीं हुजूर ने अपने अस्हाब से बैअत ली इस को बैअते रिज़वान कहते हैं, बैअत की ख़बर से कुफ़फ़ार ख़ौफ़ज़दा हुए और उन के अहलुर्राय ने येही मुनासिब समझा कि सुल्ह कर लें। चुनान्चे, सुल्ह नामा लिखा गया और साले आयिन्दा हुजूर का तशरीफ़ लाना करार पाया और येह सुल्ह मुसलमानों के हक़ में बहुत नाफ़ेअ हुई बल्कि नताइज के ए'तिबार से फ़त्ह साबित हुई, इसी लिये अक्सर मुफ़स्सरीन फ़त्ह से सुल्हे हुदैबिया मुराद लेते हैं और बा'ज तमाम फ़तूहाते इस्लाम जो आयिन्दा होने वाली थीं और माज़ी के सीगे से ता'बीर उन के यकीनी होने की वजह से है। (غزوات وروح البهائم) 3 : और तुम्हारी बदैलत उम्मत की मग़िफ़रत फ़रमाए। (غزوات وروح البهائم) 4 : दुन्यवी भी और उख़वी भी 5 : तब्तीगे रिसालत व इक़ामत मरासिमे रियासत में। (بهايون) 6 : दुश्मनों पर कामिल गुलबा अता कर के। 7 : और बा वुजूद अक़ीदए रासिखा के इत्मीनाने नफ़्स हासिल हो। 8 : वोह कादिर है जिस से चाहे अपने रसूल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की मदद फ़रमाए आस्मान व ज़मीन के लश्करों से या तो आस्मान और ज़मीन के फ़िरिश्ते मुराद हैं या आस्मानों के फ़िरिश्ते और ज़मीन के हैवानात। 9 : उस ने मोमिनीन के दिलों की तस्कीन और वा'दए फ़त्हो नुस्त इस लिये फ़रमाया।

الْمُؤْمِنَاتِ جَنَّتِ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَلِدِينَ فِيهَا وَيُكَفَّرُ عَنْهُمْ

ईमान वाली औरतों को बागों में ले जाए जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहें और उन की बुराइयां

سَيِّئَاتِهِمْ ۖ وَكَانَ ذَلِكَ عِنْدَ اللَّهِ قَوْلًا عَظِيمًا ۝ وَيُعَذِّبُ الْمُنَافِقِينَ

उन से उतार दे और यह **अल्लाह** के यहां बड़ी काम्याबी है और अज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों

وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ الظَّالِمِينَ بِاللَّهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۖ

और मुनाफ़िक़ औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को जो **अल्लाह** पर बुरा गुमान रखते हैं¹⁰

عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۗ وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۖ

उन्हीं पर है बुरी गदिश¹¹ और **अल्लाह** ने उन पर गज़ब फ़रमाया और उन्हें ला'नत की और उन के लिये जहन्नम तय्यार फ़रमाया

وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۝ وَاللَّهُ جُنُودُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ

और वोह क्या ही बुरा अन्जाम है और **अल्लाह** ही की मिल्क हैं आस्मानों और ज़मीन के सब लश्कर और **अल्लाह**

عَزِيزًا حَكِيمًا ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝

इज़्ज़त व हिक़मत वाला है बेशक हम ने तुम्हें भेजा हाज़िर व नाज़िर¹² और खुशी और डर सुनाता¹³

لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ ۖ وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝

ताकि ऐ लोगो तुम **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ता'जीमो तौक़ीर करो और सुब्हो शाम **अल्लाह** की

أَصِيلًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ ۖ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ

पाकी बोलो¹⁴ वोह जो तुम्हारी बैअत करते हैं¹⁵ वोह तो **अल्लाह** ही से बैअत करते हैं¹⁶ उन के हाथों पर¹⁷

أَيْدِيهِمْ ۗ فَمَنْ تَبَّكَتْ فَإِنَّمَا يَنْكُثُ عَلَى نَفْسِهِ ۗ وَمَنْ أَوْفَى بِعَاقِدَتِهِ

अल्लाह का हाथ है तो जिस ने अहद तोड़ा उस ने अपने बड़े अहद को तोड़ा¹⁸ और जिस ने पूरा किया वोह अहद जो उस ने

10 : कि वोह अपने रसूल सख्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** और उन पर ईमान लाने वालों की मदद न फ़रमाएगा ।

11 : अज़ाब व हलाक की । 12 : अपनी उम्मत के आ'माल व अहवाल का ताकि रोज़े क़ियामत इन की गवाही दो । 13 : या'नी

मोमिनीने मुक़िरीन को जन्नत की खुशी और ना फ़रमानों को अज़ाबे दोज़ख़ का डर सुनाता । 14 : सुब्ह की तस्बीह में नमाज़े फ़ज़्र और

शाम की तस्बीह में बाकी चारों नमाज़ें दाखिल हैं । 15 : मुराद इस बैअत से बैअते रिज़वान है जो नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने

हुदैबिया में ली थी । 16 : क्यूं कि रसूल से बैअत करना **अल्लाह** तआला ही से बैअत करना है जैसे कि रसूल की इत्ताअत **अल्लाह**

तआला की इत्ताअत है । 17 : जिन से उन्हों ने सख्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की बैअत का शरफ़ हासिल किया । 18 : इस अहद

तोड़ने का कबाल उसी पर पड़ेगा ।

عَلَيْهِ اللَّهُ فَسَيُوتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ١٠ سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِّنَ

अब्बाह से किया था तो बहुत जल्द अब्बाह उसे बड़ा सवाब देगा¹⁹ अब तुम से कहेंगे जो गंवार (दीहाती) पीछे रह

الْأَعْرَابِ شَغَلْنَا أَمْوَالَنَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا يَقُولُونَ بِالسِّنْتِهِمْ

गए थे²⁰ कि हमें हमारे माल और हमारे घर वालों ने जाने से मशगूल रखा²¹ अब हुजूर हमारी मग़िफ़रत चाहें²² अपनी ज़बानों से वोह बात कहते हैं

مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ طُ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ

जो उन के दिलों में नहीं²³ तुम फ़रमाओ तो अब्बाह के सामने किसे तुम्हारा कुछ इख़्तियार है अगर वोह तुम्हारा बुरा

صَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ط بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ١١ بَلْ

चाहे या तुम्हारी भलाई का इरादा फ़रमाए बल्कि अब्बाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है बल्कि

ظَنَنْتُمْ أَنْ لَّنْ يَتَّقِبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَزِينِ

तुम तो येह समझे हुए थे कि रसूल और मुसलमान हरगिज़ घरों को वापस न आएंगे²⁴ और इसी को

ذَلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ٥ وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُورًا ١٢ وَمَنْ لَّمْ

अपने दिलों में भला समझे हुए थे और तुम ने बुरा गुमान किया²⁵ और तुम हलाक होने वाले लोग थे²⁶ और जो

يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ١٣ وَ لِلَّهِ مُلْكُ

ईमान न लाए अब्बाह और उस के रसूल पर²⁷ तो बेशक हम ने काफ़ि़रों के लिये भड़कती आग तय्यार कर रखी है और अब्बाह ही के लिये है

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط يَغْفِر لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ط وَ

आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अज़ाब करे²⁸ और

كَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ١٤ سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انطَلَقْتُمْ إِلَىٰ

अब्बाह बख़्शने वाला मेहरबान है अब कहेंगे पीछे बैठ रहने वाले²⁹ जब तुम ग़नीमतें

19 : या'नी हुदैबिया से तुम्हारी वापसी के वक्त । 20 : कबीलए गिफ़र व मुज़ैना व जुहैना व अशजअ व अस्लम के जब कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने साले हुदैबिया ब निय्यते उम्रह मक्कए मुकर्रमा का इरादा फ़रमाया तो हवालिये मदीना के गाउं वाले और अहले वादिया ब खौफ़े कुरैश आप के साथ जाने से रुके बा वुजूदे कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने उम्रह का एहराम बांधा था और कुरबानियां साथ थीं और इस से साफ़ जाहिर था कि जंग का इरादा नहीं है फिर भी बहुत से आ'राब पर जाना बार हुवा और वोह काम का हीला कर के रह गए और उन का गुमान येह था कि कुरैश बहुत ताक़त वर हैं मुसलमान उन से बच कर न आएंगे सब वहीं हलाक हो जाएंगे, अब जब कि मददे इलाही से मुआमला उन के ख़याल के बिल्कुल खिलाफ़ हुवा तो उन्हें अपने न जाने पर अफ़सोस होगा और मा'ज़िरत करेंगे 21 : क्यूं कि औरतें और बच्चे अकेले थे और उन का कोई ख़बर गीरां न था इस लिये हम कासिर रहे । 22 : अब्बाह तआला उन की तक्ज़ीब फ़रमाता है : 23 : या'नी वोह ए'तिज़ार व तलबे इस्तिफ़र में झूटे हैं । 24 : दुश्मन इन सब का वहीं ख़ातिमा कर देंगे । 25 : कुफ़्रो फ़साद के ग़लबे का और वा'दए इलाही के पूरा न होने का । 26 : अज़ाबे इलाही के मुस्तहिक़ । 27 : इस आयत

مَعَانِمٍ لِّتَأْخُذُوا هَٰذِهِمْ وَنَاتَّبِعْكُمْ يُرِيدُونَ أَنْ يُبَدِّلُوا كَلِمَ اللَّهِ ۗ ط

लेने चलो³⁰ तो हमें भी अपने पीछे आने दो³¹ वोह चाहते हैं **ALLAH** का कलाम बदल दें³²

قُلْ لَنْ تَتَّبِعُونَا كَذَلِكُمْ قَالَ اللَّهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُولُونَ بَلْ

तुम फ़रमाओ हरगिज़ तुम हमारे साथ न आओ **ALLAH** ने पहले से यूँही फ़रमा दिया है³³ तो अब कहेंगे बल्कि

تَحْسُدُونََنَا ۗ بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝١٥ قُلْ لِلْمُخَلَّفِينَ مِنَ

तुम हम से जलते हो³⁴ बल्कि वोह बात न समझते थे³⁵ मगर थोड़ी³⁶ उन पीछे रह गए हुए

الْأَعْرَابِ سَتُدْعُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ أُولِي بَأْسٍ شَرِيذٍ تُقَاتِلُونَهُمْ أَوْ

गंवारों से फ़रमाओ³⁷ अन्करीब तुम एक सख़्त लड़ाई वाली कौम की तरफ़ बुलाए जाओगे³⁸ कि उन से लड़ो या

يُسَلِّمُونَ ۚ فَإِنْ تَطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ أَجْرًا حَسَنًا ۚ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا

वोह मुसलमान हो जाएं फिर अगर तुम फ़रमान मानोगे **ALLAH** तुम्हें अच्छा सवाब देगा³⁹ और अगर फिर जाओगे जैसे

تَوَلَّيْتُمْ مِنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝١٦ لَيْسَ عَلَى الْأَعْيَىٰ حَرْجٌ

पहले फिर गए⁴⁰ तो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब देगा अन्धे पर तंगी नहीं⁴¹

وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرْجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرْجٌ ۗ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَ

और न लंगड़े पर मुजायका और न बीमार पर मुआख़ज़ा⁴² और जो **ALLAH** और उस के

में ए'लाम है कि जो **ALLAH** तआला पर और उस के रसूल पर ईमान न लाए इन में से किसी एक का भी मुन्किर हो वोह काफ़िर है । 28 : येह सब उस की मशिय्यत व हिक्मत पर है 29 : जो हुदैबिया की हाज़िरी से कासिर रहे, ऐ ईमान वालो ! 30 : खैबर की । इस का वाकिआ येह था कि जब मुसलमान सुल्हे हुदैबिया से फ़ारिग हो कर वापस हुए तो **ALLAH** तआला ने उन से फुत्हे खैबर का वा'दा फ़रमाया और वहां की ग़नीमतें हुदैबिया में हाज़िर होने वालों के लिये मख़सूस कर दी गई, जब मुसलमानों के खैबर की तरफ़ रवाना होने का वक़्त आया तो उन लोगों को लालच आया और उन्होंने न ब तमए ग़नीमत कहा 31 : या'नी हम भी खैबर को तुम्हारे साथ चलें और जंग में शरीक हों **ALLAH** तआला फ़रमाता है : 32 : या'नी **ALLAH** तआला का वा'दा जो अहले हुदैबिया के लिये फ़रमाया था कि खैबर की ग़नीमत ख़ास उन के लिये है । 33 : या'नी हमारे मदीना आने से पहले । 34 : और येह गवारा नहीं करते कि हम तुम्हारे साथ ग़नीमतें पाएं **ALLAH** तआला फ़रमाता है : 35 : दीन की 36 : या'नी महज़ दुन्या की हत्ता कि उन का ज़बानी इक़्रार भी दुन्या ही की गरज़ से था और उमूरे आख़िरत को बिल्कुल नहीं समझते थे । (मूल) 37 : जो मुख़लिफ़ क़बाइल के लोग हैं और उन में बा'ज ऐसे भी हैं जिन के ताइब होने की उम्मीद की जाती है । बा'ज ऐसे भी हैं जो निफ़ाक़ में बहुत पुख़्ता और सख़्त हैं, उन्हें आज्माइश में डालना मन्ज़ूर है ताकि ताइब व ग़ैर ताइब में फ़र्क़ हो जाए इस लिये हुक्म हुवा कि उन से फ़रमा दीजिये 38 : इस कौम से बनी हनीफ़ा यमामा के रहने वाले जो मुसैलमा कज़ाब की कौम के लोग हैं वोह मुराद हैं जिन से हज़रते अबू बक्र सिद्दीक **رضي الله تعالى عنه** ने जंग फ़रमाई और येह भी कहा गया है कि उन से मुराद अहले फ़रस व रूम हैं जिन से जंग के लिये हज़रते उमर **رضي الله تعالى عنه** ने दा'वत दी । 39 मरसला : येह आयत शैख़ैने जलीलैन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक व हज़रते उमर फ़ारूक **رضي الله تعالى عنهما** के सिद्दहते ख़िलाफ़त की दलील है कि इन हज़रत की इताअत पर जन्मत का और इन की मुख़ालफ़त पर जहन्म का वा'दा दिया गया । 40 : हुदैबिया के मौक़अ पर 41 : जिहाद से रह जाने में । शाने नुज़ूल : जब ऊपर की आयत नाज़िल हुई तो जो लोग अपाहज व साहिबे उज़्र थे उन्हीं ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह **صلى الله تعالى عليه وسلم** हमारा क्या हाल होगा ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई । 42 : कि येह उज़्र जाहिर हैं और जिहाद में हाज़िर न होना इन लोगों के लिये जाइज़ है क्यूं कि न येह लोग दुश्मन पर हम्ला करने की ताक़त रखते हैं न उस के

رَسُولَهُ يُدْخِلُهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَنْ يَتَوَلَّ

रसूल का हुक्म माने **अल्लाह** उसे बागों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें रवां और जो फिर जाएगा⁴³

يُعَذِّبُهُ عَذَابًا أَلِيمًا ۝۱۷ لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ

उसे दर्दनाक अज़ाब फ़रमाएगा बेशक **अल्लाह** राज़ी हुआ ईमान वालों से जब वोह उस पेड़ के नीचे

تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ

तुम्हारी बैअत करते थे⁴⁴ तो **अल्लाह** ने जाना जो उन के दिलों में है⁴⁵ तो उन पर इत्मीनान उतारा और

فَتْحًا قَرِيبًا ۝۱۸ وَمَغَانِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا

उन्हें जल्द आने वाली फ़तह का इन्आम दिया⁴⁶ और बहुत सी ग़नीमतें⁴⁷ जिन को लें और **अल्लाह** इज़्ज़त व

حَكِيمًا ۝۱۹ وَعَدَّكُمْ اللَّهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً تَأْخُذُونَهَا فَعَجَلَ لَكُمْ هَذِهِ

हिक्मत वाला है और **अल्लाह** ने तुम से वा'दा किया है बहुत सी ग़नीमतों का कि तुम लोग⁴⁸ तो तुम्हें यह जल्द अता फ़रमा दी

हमले से बचने और भागने की, उन्हीं के हुक्म में दाखिल हैं। वोह बुढ़े जईफ़ जिन्हें निशस्तो बरखास्त की ताकत नहीं या जिन्हें दमा और खांसी है या जिन की तिल्ली बहुत बढ़ गई है और उन्हें चलना फिरना दुश्वार है, जाहिर है कि येह उज़्र जिहाद से रोकने वाले हैं इन के इलावा और भी आ'ज़ार हैं मसलन गायत दरजे की मोहताजी और सफ़र के ज़रूरी हवाइज पर कुदरत न रखना या ऐसे अशग़ाले ज़रूरिया जो सफ़र से माने अं हो जैसे किसी ऐसे मरीज की खिदमत जिस की खिदमत इस पर लाज़िम है और इस के सिवा कोई उस का अन्जाम देने वाला नहीं। 43 : ताअत से ए'राज करेगा और कुफ़्रो निफ़ाक़ पर रहेगा 44 : हुदैबिया में। चूँकि इन बैअत करने वालों को रिज़ाए इलाही की बिशारत दी गई इस लिये इस बैअत को बैअते रिज़वान कहते हैं, इस बैअत का सबब ब अस्बाबे ज़ाहिर येह पेश आया कि सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने हुदैबिया से हज़रते उस्माने ग़नी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** को अशराफे कुरैश के पास मक्कए मुकर्रमा भेजा कि उन्हें ख़बर दें कि सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** बैतुल्लाहा की जियारत के लिये ब कस्दे उम्रह तशरीफ़ लाए हैं, आप का इरादा जंग का नहीं है और येह भी फ़रमा दिया था कि जो कमज़ोर मुसल्मान वहां हैं उन्हें इत्मीनान दिला दें कि मक्कए मुकर्रमा अन्क़रीब फ़तह होगा और **अल्लाह** तआला अपने दीन को ग़ालिब फ़रमाएगा। कुरैश इस बात पर मुत्तफ़िक़ रहे कि सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** इस साल तो तशरीफ़ न लाएं और हज़रते उस्माने ग़नी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से कहा कि अगर आप का'बए मुअज़्ज़मा का त्वाफ़ करना चाहें तो करें, हज़रते उस्माने ग़नी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया कि ऐसा नहीं हो सकता कि मैं बिग़ैर रसूले करीम के त्वाफ़ करूँ, यहां मुसल्मानों ने कहा कि उस्माने ग़नी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** बड़े खुश नसीब हैं जो का'बए मुअज़्ज़मा पहुंचे और त्वाफ़ से मुशरफ़ हुए। हज़ूर ने फ़रमाया : मैं जानता हूँ कि वोह हमारे बिग़ैर त्वाफ़ न करेंगे, हज़रते उस्माने ग़नी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने मक्कए मुकर्रमा के जईफ़ मुसल्मानों को हस्बे हुक्म फ़तह की बिशारत भी पहुंचाई, फिर कुरैश ने हज़रते उस्माने ग़नी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** को रोक लिया यहां येह ख़बर मशहूर हो गई कि हज़रते उस्मान **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** शहीद कर दिये गए, इस पर मुसल्मानों को बहुत जोश आया और रसूले करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने सहाबा से कुपफ़ार के मुक़ाबिल जिहाद में साबित रहने पर बैअत ली, येह बैअत एक बड़े ख़ारदार दरख़्त के नीचे हुई जिस को अरब में "समुरह" कहते हैं, हज़ूर ने अपना बायां दस्ते मुबारक दाहने दस्ते अक्दस में लिया और फ़रमाया कि येह उस्मान **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की बैअत है और फ़रमाया : या रब ! उस्मान **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** तेरे और तेरे रसूल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के काम में हैं इस वाक़िए से मा'लूम होता है कि सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को नूरे नुबुव्वत से मा'लूम था कि हज़रते उस्मान **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** शहीद नहीं हुए जभी तो उन की बैअत ली, मुशिरकीन इस बैअत का हाल सुन कर खाइफ़ हुए और उन्हीं ने हज़रते उस्माने ग़नी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** को भेज दिया। हदीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया कि जिन लोगों ने दरख़्त के नीचे बैअत की थी उन में से कोई भी दोजख़ में दाख़िल न होगा। (मुस्ल शरीफ़) और जिस दरख़्त के नीचे बैअत की गई थी **अल्लाह** तआला ने उस को ना पदीद (ना पैद) कर दिया, साले आयिन्दा सहाबा ने हर चन्द तलाश किया किसी को उस का पता भी न चला। 45 : सिदक़ व इख़लास व वफ़ा। 46 : या'नी फ़तहे ख़ैबर का जो हुदैबिया से वापस हो कर छ⁶ माह बा'द हासिल हुई। 47 : ख़ैबर की और अहले ख़ैबर के अम्वाल कि रसूले करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने तक्सीम फ़रमाए। 48 : और तुम्हारी फ़तुहात होती रहेंगी।

وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُونَ آيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ

और लोगों के हाथ तुम से रोक दिये⁴⁹ और इस लिये कि ईमान वालों के लिये निशानी हो⁵⁰ और तुम्हें

صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ۚ ۚ وَأُخْرَى لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ

सीधी राह दिखा दे⁵¹ और एक और⁵² जो तुम्हारे बल (बस) की न थी⁵³ वोह **अल्लाह** के कब्जे

بِهَا ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۚ ۚ وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا

में है और **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ादिर है और अगर काफ़िर तुम से लड़ें⁵⁴

لَوْوَالِآءُ بَارِئِينَ لَا يَجِدُونَ وِلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۚ ۚ سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي

तो ज़रूर तुम्हारे मुक़ाबले से पीठ फेर देंगे⁵⁵ फिर न कोई हिमायती पाएंगे न मददगार **अल्लाह** का दस्तूर है कि

قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ ۚ وَلَن تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۚ ۚ وَهُوَ الَّذِي

पहले से चला आता है⁵⁶ और हरगिज़ तुम **अल्लाह** का दस्तूर बदलता न पाओगे और वोही है जिस ने

كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِن بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ

उन के हाथ⁵⁷ तुम से रोक दिये और तुम्हारे हाथ उन से रोक दिये वादिये मक्का में⁵⁸ बा'द इस के कि तुम्हें उन पर काबू

عَلَيْهِمْ ۖ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۚ ۚ هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَ

दे दिया था और **अल्लाह** तुम्हारे काम देखता है वोह⁵⁹ वोह हैं जिन्हों ने कुफ़ किया और

صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيِ مَعْكُوفًا أَنْ يَبْلُغَ مَجَلَّهُ ۖ وَ

तुम्हें मस्जिदे ह़राम से⁶⁰ रोका और कुरबानी के जानवर रुके पड़े अपनी जगह पहुंचने से⁶¹ और

49 : कि वोह खाइफ़ हो कर तुम्हारे अहलो इयाल को ज़रर न पहुंचा सके। इस का वाक़िआ येह था कि जब मुसल्मान जंगे ख़ैबर के लिये रवाना हुए तो अहले ख़ैबर के हलीफ़ बनी असद व ग़त्फ़ान ने चाहा कि मदीनए तय्यिबा पर हम्ला कर के मुसल्मानों के अहलो इयाल को लूट लें **अल्लाह** तआला ने उन के दिलों में रो'ब डाला और उन के हाथ रोक दिये। **50** : येह ग़नीमत देना और दुश्मनों के हाथ रोक देना। **51** : **अल्लाह** तआला पर तवक्कुल करने और काम उस पर मुफ़व्वज़ (के सिपुर्द) करने की जिस से बसीरत व यकीन ज़ियादा हो। **52** : फ़त्ह **53** : मुराद इस से या मगानिमे फ़ारिस व रूम (फ़ारस व रूम की ग़नीमतें) हैं या ख़ैबर जिस का **अल्लाह** तआला ने पहले से वा'दा फ़रमाया था और मुसल्मानों को उम्मीदे काम्याबी थी **अल्लाह** तआला ने उन्हें फ़त्ह दी और एक कौल येह है कि वोह फ़त्हे मक्का है और एक कौल है कि वोह हर फ़त्ह है जो **अल्लाह** तआला ने मुसल्मानों को अ़ता फ़रमाई। **54** : या'नी अहले मक्का या अहले ख़ैबर के हुलफ़ा असद व ग़त्फ़ान। **55** : मग़लूब होंगे और उन्हें हज़ीमत होगी **56** : कि वोह मोमिनीन की मदद फ़रमाता है और काफ़िरों को मक्हूर (रुस्वा) करता है। **57** : या'नी कुफ़फ़ार के **58** : रोजे फ़त्हे मक्का। और एक कौल येह है कि "बतूने मक्का" से हुदैबिया मुराद है और इस के शाने नुज़ूल में हज़रते अनस **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मरवी है कि अहले मक्का में से अस्सी हथियार बन्द जवान "जबले तर्ईम" से मुसल्मानों पर हम्ला करने के इरादे से उतरे, मुसल्मानों ने उन्हें गिरिफ़तार कर के सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की खिदमत में हाज़िर किया। हुज़ूर ने मुआफ़ फ़रमाया और छोड़ दिया। **59** : कुफ़फ़ारे मक्का **60** : वहां पहुंचने से और उस का तवाफ़ करने से **61** : या'नी मक़ामे ज़ह़ से जो ह़रम में है।

لَوْلَا رَجَالٌ مُّؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ مُّؤْمِنَاتٌ لَّمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ تَطَّوَّهُمْ

अगर यह न होता कुछ मुसलमान मर्द और कुछ मुसलमान औरतें⁶² जिन की तुम्हें खबर नहीं⁶³ कहीं तुम उन्हें रौंद डालो⁶⁴

فَتُصِيبُكُمْ مِنْهُمْ مَعْرَةٌ بَغَيْرِ عِلْمٍ لِيَدْخُلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ

तो तुम्हें उन की तरफ़ से अन्जानी में कोई मक्कह (ना पसन्दीदा शौ) पहुंचे तो हम तुम्हें उन के क़िताल की इजाज़त देते उन का यह बचाव इस लिये है कि **अल्लाह** अपनी रहमत में

يَشَاءُ لَوْلَا تَزَيْلُوا الْعَذَابَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ٥٥ اِذْ

दाख़िल करे जिसे चाहे अगर वोह जुदा हो जाते⁶⁵ तो हम ज़रूर उन में के काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब देते⁶⁶ जब

جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَبِيَّةَ الْحَبِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةَ فَأَنْزَلَ اللَّهُ

कि काफ़िरों ने अपने दिलों में अड़ (ज़िद) रखी वोही ज़मानए जाहिलियत की अड़⁶⁷ तो **अल्लाह** ने अपना

سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالزَّمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ وَ

इत्मीनान अपने रसूल और ईमान वालों पर उतारा⁶⁸ और परहेज़ गारी का कलिमा उन पर लाज़िम फ़रमाया⁶⁹ और

كَانُوا أَحْسَبَ بِهَا وَأَهْلَهَا ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ٥٦ لَقَدْ صَدَقَ

वोह इस के ज़ियादा सज़ावार और इस के अहल थे⁷⁰ और **अल्लाह** सब कुछ जानता है⁷¹ बेशक **अल्लाह**

اللَّهُ رَسُولَهُ الرَّءْيَا بِالْحَقِّ لَتَدْخُلَنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ

ने सच कर दिया अपने रसूल का सच्चा ख़्बाब⁷² बेशक तुम ज़रूर मस्जिदे हराम में दाख़िल होगे अगर **अल्लाह** चाहे

إِمْنِينَ ۗ مُحَلِّقِينَ رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ ۗ لَا تَخَافُونَ ۗ فَعَلِمَ مَا لَمْ

अमनो अमान से अपने सरों के⁷³ बाल मुंडाते या⁷⁴ तरशवाते बे ख़ौफ़ तो उस ने जाना जो तुम्हें

62 : मक्कए मुकर्रमा में हैं 63 : तुम उन्हें पहचानते नहीं 64 : कुफ़र से क़िताल करने में 65 : या'नी मुसलमान काफ़िरों से मुमताज़

हो जाते 66 : तुम्हारे हाथ से क़त्ल करा के और तुम्हारी कैद में ला कर। 67 : कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ और हुज़ूर के अस्हाब

को का'बए मुअज़्ज़मा से रोका 68 : कि उन्हीं ने साले आयिन्दा आने पर सुल्ह की अगर वोह भी कुफ़ारे कुरैश की तरह ज़िद करते

तो ज़रूर जंग हो जाती। 69 : कलिमाए तक्वा से मुराद "لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ" है। 70 : क्यूं कि **अल्लाह** तअ़ाला ने उन्हीं अपने

दीन और अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की सोहबत से मुशरफ़ फ़रमाया। 71 : काफ़िरों का हाल भी जानता है मुसल्मानों का भी, कोई

चीज़ उस से मख़फ़ी नहीं। 72 शाने नुज़ूल : रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने हुदैबिया का क़स्द फ़रमाने से क़ब्ल मदीनाए तय्यिबा

में ख़्बाब देखा था कि आप मअ अस्हाब के मक्कए मुअज़्ज़मा में ब अमन दाख़िल हुए और अस्हाब ने सर के बाल मुंडाए बा'ज ने

तरशवाए, येह ख़्बाब आप ने अपने अस्हाब से बयान फ़रमाया तो उन्हीं खुशी हुई और उन्हीं ने ख़याल किया कि इसी साल वोह मक्कए

मुकर्रमा में दाख़िल होंगे, जब मुसल्मान हुदैबिया से बा'द सुल्ह के वापस हुए और उस साल मक्कए मुकर्रमा में दाख़िला न हुवा तो

मुनाफ़िक्कीन ने तमस्खुर (तन्ज़) किया ता'न किये और कहा कि वोह ख़्बाब क्या हुवा, इस पर **अल्लाह** तअ़ाला ने येह आयत नाज़िल

फ़रमाई और इस ख़्बाब के मज्मून की तस्दीक़ फ़रमाई कि ज़रूर ऐसा होगा। चुनान्चे, अगले साल ऐसा ही हुवा और मुसल्मान अगले

साल बड़े शानो शकोह के साथ मक्कए मुकर्रमा में फ़ातेहाना दाख़िल हुए। 73 : तमाम 74 : थोड़े से।

تَعَلَّبُوا فَجَعَلْنَا مِنْ دُونِ ذَلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا ﴿٢٤﴾ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ

मा'लूम नहीं⁷⁵ तो इस से पहले⁷⁶ एक नज़्दीक आने वाली फ़त्ह रखी⁷⁷ वोही है जिस ने अपने रसूल को

بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ

हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे⁷⁸ और **अल्लाह** काफ़ी है

شَهِيدًا ﴿٢٨﴾ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ ۗ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ

गवाह⁷⁹ मुहम्मद **अल्लाह** के रसूल हैं और उन के साथ वाले⁸⁰ काफ़िरों पर सख्त हैं⁸¹

رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا

और आपस में नर्म दिल⁸² तू उन्हें देखेगा रुकूअ करते सज्दे में गिरते⁸³ **अल्लाह** का फ़ज़ल व रिज़ा चाहते

سَيِّئَاتِهِمْ فِي وُجُوهِهِمْ مِنْ أَثَرِ السُّجُودِ ۗ ذَلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَةِ ۗ وَ

उन की अ़लामत उन के चेहरों में है सज्दों के निशान से⁸⁴ यह उन की सिफ़त तौरैत में है और

مَثَلُهُمْ فِي الْإِنْجِيلِ ۗ كَزُرٍّ أَخْرَجَ شِطَّةً فَأَزْرَأَهُ فَاسْتَعْظَمَ

उन की सिफ़त इन्जील में⁸⁵ जैसे एक खेती उस ने अपना पट्टा निकाला फिर उसे ताक़त दी फिर दबीज हुई

فَاسْتَوَىٰ عَلَىٰ سَوْقِهِ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۗ وَعَدَّ اللَّهُ

फिर अपनी साक़ पर सीधी खड़ी हुई किसानों को भली लगती है⁸⁶ ताकि उन से काफ़िरों के दिल जलें **अल्लाह** ने वा'दा किया

75 : या'नी यह कि तुम्हारा दाख़िल होना अगले साल है और तुम इसी साल समझे थे और तुम्हारे लिये यह ताख़ीर बेहतर थी कि इस के बाइस वहां के ज़ईफ़ मुसल्मान पामाल होने से बच गए। 76 : या'नी दुखूले हरम से कब्ज़ 77 : फ़त्हे ख़ैबर कि फ़त्हे मौज़द (वा'दा की गई फ़त्ह) के हासिल होने तक, मुसल्मानों के दिल इस से राहत पाएँ, इस के बा'द जब अगला साल आया तो **अल्लाह** तआला ने हुज़ूर के ख़्बाब का जल्वा दिखलाया और वाक़िअत इस के मुताबिक़ रूनुमा हुए चुनान्चे, इशाद फ़रमाता है : 78 : ख़्बाह वोह मुशिरकीन के दीन हों या अहले किताब के, चुनान्चे **अल्लाह** तआला ने यह ने'मत अता फ़रमाई और इस्लाम को तमाम अदयान पर ग़ालिब फ़रमा दिया। 79 : अपने हबीब मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की रिसालत पर जैसा कि फ़रमाता है : 80 : या'नी उन के अस्हाब 81 : जैसा कि शेर शिकार पर और सहाबा का तशहूद कुफ़्फ़ार के साथ इस हद पर था कि वोह लिहाज़ रखते थे कि उन का बदन किसी काफ़िर के बदन से न छू जाए और उन के कपड़े से किसी काफ़िर का कपड़ा न लगने पाए। (मारक) 82 : एक दूसरे पर महब्बत व मेहरबानी करने वाले ऐसे कि जैसे बाप बेटे में हो और येह महब्बत इस हद तक पहुंच गई कि जब एक मोमिन दूसरे को देखे तो फ़र्ते महब्बत से मुसाफ़हा व मुआनका करे। 83 : कसरत से नमाज़ें पढ़ते, नमाज़ों पर मुदावमत करते 84 : और येह अ़लामत वोह नूर है जो रोज़े कियामत उन के चेहरों से ताबां होगा इस से पहचाने जाएंगे कि इन्हों ने दुन्या में **अल्लाह** तआला के लिये बहुत सज्दे किये हैं और येह भी कहा गया है कि उन के चेहरों में सज्दे का मक़ाम माहे शब चहार दहुम (चौदहवीं रात के चांद) की तरह चमक्ता दमक्ता होगा। अता का कौल है कि शब की दराज़ नमाज़ों से उन के चेहरों पर नूर नुमायां होता है जैसा कि हदीस शरीफ़ में है कि जो रात को नमाज़ की कसरत करता है सुब्द को उस का चेहरा खूब सूत हो जाता है और येह भी कहा गया है कि गर्द का निशान भी सज्दे की अ़लामत है। 85 : येह मज़कूर है कि 86 : येह मिसाल इब्तिदाए इस्लाम और इस की तरक्की की बयान फ़रमाई गई कि नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** तन्हा उठे फिर **अल्लाह** तआला ने आप को आप के मुख़्लिसीन अस्हाब से तक्वियत दी। कतादा ने कहा कि सय्यिदे अ़लाम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के अस्हाब की मिसाल इन्जील में येह लिखी है कि एक कौम खेती की तरह पैदा होगी वोह नेकियों का हुम्म करेंगे बदियों से मन्अ करेंगे, कहा गया है कि खेती हुज़ूर है और इस की शाखें अस्हाब और मोमिनीन।

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرًا عَظِيمًا ﴿٢٩﴾

उन से जो उन में ईमान और अच्छे कामों वाले हैं⁸⁷ बख्शिश और बड़े सवाब का

﴿ ٢٩ سُورَةُ الْحَجَرَاتِ مَدَنِيَّةٌ ١٠٦ ﴾ ﴿ ٢ رُكُوعَاتُهَا ﴾ ﴿ ١٨ آيَاتُهَا ﴾

सूरए हजुरात मदनिय्या है, इस में अठारह आयतें और दो रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللَّهُ के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْدِمُوا بَيْنَ يَدَيْ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاتَّقُوا

ऐ ईमान वालो **اللَّهُ** और उस के रसूल से आगे न बढ़ो² और **اللَّهُ** से

اللَّهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَبِيْعٌ عَلِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا

डरो बेशक **اللَّهُ** सुनता जानता है ऐ ईमान वालो अपनी आवाजें

أَصْوَاتِكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ

ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज से³ और उन के हजूर बात चिल्ला कर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के

لِبَعْضٍ أَنْ تَحْبَطَ أَعْمَالِكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ

सामने चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे अमल अकारत (जाएअ) न हो जाएं और तुम्हें खबर न हो⁴ बेशक वोह जो

87 : सहाबा सब के सब साहिबे ईमान व अमले सालेह हैं इस लिये येह वा'दा सभी से है। **1** : सूरए हजुरात मदनिय्या है, इस में दो रूकूअ अठारह आयतें, तीन सो तेंतालीस कलिमे और एक हज़ार चार सो छिहत्तर हर्फ हैं। **2** : या'नी तुम्हें लाज़िम है कि अस्लन तुम से तक्दीम वाकेअ न हो न कौल में न फे'ल में कि तक्दीम करना रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के अदबो एहतिराम के खिलाफ़ है, बारगाहे रिसालत में नियाज़ मन्दी व आदाब लाज़िम हैं। **शाने नुज़ूल** : चन्द शख्सों ने ईदुदुहा के दिन सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से पहले कुरबानी कर ली तो उन को हुकम दिया गया कि दोबारा कुरबानी करें और हज़रते आइशा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से मरवी है कि बा'जे लोग रमज़ान से एक रोज़ पहले ही रोज़ा रखना शुरूअ कर देते थे उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई और हुकम दिया गया कि रोज़ा रखने में अपने नबी से तक्हुम न करो। **3** : या'नी जब हज़ूर (बारगाहे रिसालत) में कुछ अर्ज़ करो तो आहिस्ता पस्त आवाज़ से अर्ज़ करो, येही दरबारे रिसालत का अदबो एहतिराम है। **4** : इस आयत में हज़ूर का इज्जालो इक्राम व अदबो एहतिराम ता'लीम फ़रमाया गया और हुकम दिया गया कि निदा करने में अदब का पूरा लिहाज़ रखें, जैसे आपस में एक दूसरे को नाम ले कर पुकारते हैं इस तरह न पुकारें, बल्कि कलिमाते अदबो ता'जीम व तौसीफो तकरीम व अल्काबे अज़मत के साथ अर्ज़ करो जो अर्ज़ करना हो कि तर्के अदब से नेकियों के बरबाद होने का अन्देशा है। **शाने नुज़ूल** : हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि येह आयत साबित बिन कैस बिन शम्मास के हक़ में नाज़िल हुई, इन्हें सिक्ले समाअत था (या'नी ऊंची आवाज़ से सुनते थे) और आवाज़ इन की ऊंची थी बात करने में आवाज़ बुलन्द हो जाया करती थी, जब येह आयत नाज़िल हुई तो हज़रते साबित अपने घर में बैठ रहे और कहने लगे कि मैं अहले नार से हूँ। हज़ूर ने हज़रते सा'द से उन का हाल दरयाफ़्त फ़रमाया। उन्होंने अर्ज़ किया कि वोह मेरे पड़ोसी हैं और मेरे इल्म में उन्हें कोई बीमारी तो नहीं हुई, फिर आ कर हज़रते साबित से इस का ज़िक्र किया साबित ने कहा : येह आयत नाज़िल हुई और तुम जानते हो कि मैं तुम सब से ज़ियादा बुलन्द आवाज़ हूँ तो मैं जहन्मी हो गया। हज़रते सा'द ने येह हाल ख़िदमते अक्दस में अर्ज़ किया तो हज़ूर ने फ़रमाया कि वोह अहले जन्नत से हैं।